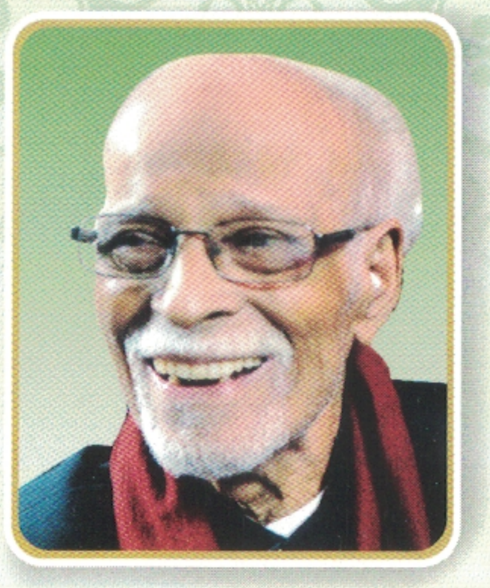


Shri Lambert Mascarenhas

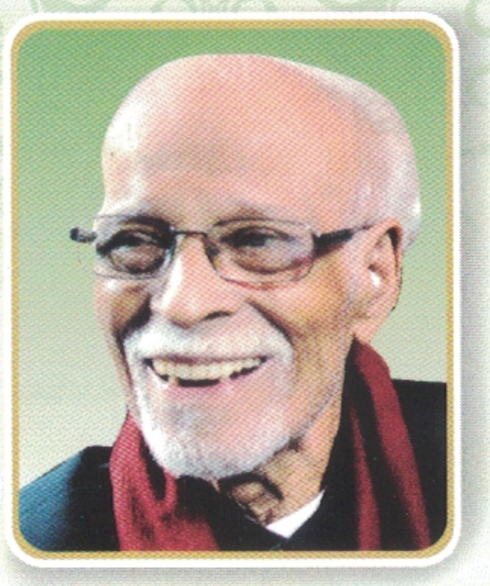
Shri Lambert Mascarenhas is an eminent writer, journalist and freedom fighter. He has been recognised for his contribution to the enrichment of the cultural heritage of Goa through his literary accomplishments and his indefatigable efforts to rekindle nationalism in the minds and hearts of Goans during the Portuguese Rule in Goa.

2. Born on September 17, 1914 in Goa, Shri Mascarenhas graduated from St. Xavier's College, Bombay in English Literature. He began his journalistic career as a Junior Reporter at the 'Morning Standard' and then worked as the Sub-Editor at the 'Bombay Sentinel'. Whilst on a visit to Goa in 1948, he wrote dispatches on the oppressive conditions here, under Portuguese Rule, for which he was arrested and sentenced to prison. He was released on bail and fled to Bombay, where he lived in exile for 12 years until the Liberation of Goa. As he was involved in the freedom struggle of Goa, and a member of the National Congress (Goa) and later of the 'United Front of Goans', in 1956 he joined the 'Goan Tribune', which espoused the cause of Goa's freedom from the Portuguese Rule, where he remained as Editor until 1961.

3. Shri Mascarenhas after returning to free Goa became the Editor of the Navhind and Times - Goa's first English newspaper. After three years, he founded his own monthly magazine Goa Today, now in its forty-eighth year of publication. He edited and brought out this magazine almost single-handedly for 19 years. He wrote his first novella 'The First City' - a satire on Bombay City. His novel 'Sorrowing Lies My Land' got much critical acclaim. Translated into Marathi, Telegu, Konkani and Portuguese and reprinted four times, this novel has been included as one of the novels for compulsory reading by the Goa University for students of the M.A., literature degree. He continued to write in newspapers and magazines, and published 3 books In the Womb of Saudade -a collection of short stories, The Greater Tragedy - a play and Heartbreak Passage - a novel.

4. Shri Mascarenhas has encouraged young musical talent throughout his life,. He regularly organized musical performances such as Mando Festival in Goa. In 1996 he wrote a Konkani Tiatr 'Boxtench Tapott Marinaka', which was performed at the Kala Academy, Goa.

5. Shri Mascarenhas has been awarded recognition on many occasions as a Freedom Fighter, by the Government of Goa. He was awarded the State Cultural Award by the, Government of Goa, Laxmidas Borkar Writers Award in 2004, the Gomant Sharada Puraskar for his lifelong contribution to the field of literature by the Kala Academy, Goa in 2008, the Lifetime Achievement Award by the Goa Chamber of Commerce & Industry at their Media Awards Ceremony in 2013 and the Gomant Vibhushan Award-the highest civilian award by the State Government, by the Government of Goa in 2014 for his contribution to the Goan Freedom Movement, and his journalistic and literary achievements.



श्री लाम्बर्ट मास्कारेन्हस

श्री लाम्बर्ट मास्कारेन्हस, सुप्रसिद्ध लेखक, पत्रकार और स्वतंत्रता सेनानी हैं। आपको साहित्यिक कौशल के माध्यम से गोवा की सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध बनाने में आपके योगदान और गोवा में पुर्तगाली शासन के दौरान गोवा के लोगों के दिल दिमाग में राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने के लिए आपके अथक प्रयासों के लिए जाना जाता है।

2. आपका जन्म सितम्बर 17, 1914 को हुआ। आपने सेंट ज़ेवियर कॉलिज, बम्बई से अंग्रेजी साहित्य में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। आपने पत्रकारिता का अपना कॅरिअॅर 'मार्निंग स्टैंडर्ड' में जूनियर रिपोर्टर के रूप में शुरू किया और फिर "बाम्बे सेंटिनल" में उप-संपादक के रूप में कार्य किया। वर्ष, 1948 में गोवा दौरे के दौरान आपने पुर्तगाली शासन की दमनकारी नीति के संबंध में लेख लिखे जिसके कारण आपको गिरफ्तार किया गया और जेल भेज दिया गया। आपको जमानत पर छोड़ा गया और आप बम्बई आ गए जहां पर आप गोवा की मुक्ति तक 12 वर्ष के लिए वनवास में रहे। चूंकि आप गोवा के स्वतंत्रता संघर्ष में शामिल थे और राष्ट्रीय कांग्रेस (गोवा) और बाद में 'यूनाइटेड फ्रंट ऑव गोवंस' के सदस्य थे इसलिए आपने वर्ष, 1956 में 'गोवन ट्रिब्यून' ज्वॉइन कर लिया जो पुर्तगाली शासन से गोवा की स्वतंत्रता का कारण बना तथा वर्ष, 1961 तक आप इसके संपादक रहे।

3. स्वतंत्र गोवा में वापस लौटने के बाद आप गोवा के पहले अंग्रेजी समाचार पत्र नवहिंद एंड टाइम्स के संपादक बने। तीन वर्ष बाद आपने गोवा टुडे नामक अपनी मासिक पत्रिका शुरू की और अब यह पत्रिका प्रकाशन के अपने अड़तालीसवें वर्ष में है। आपने 19 वर्ष तक इस पत्रिका का संपादन किया और अकेले ही इसे प्रकाशित किया। आपने बम्बई शहर के प्रहसन पर पहला उपन्यास 'द फर्स्ट सिटी' लिखा। आपके उपन्यास 'सौरोइंग लाइज़ माई लैंड' की काफी समालोचना हुई। इसका मराठी, तेलुगु, कोंकणी और पुर्तगाली भाषाओं में अनुवाद हुआ और चार बार इसका पुन: मुद्रण हुआ, इस उपन्यास को एम.ए., साहित्य की डिग्री के गोवा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य रूप से पढ़े जाने वाले उपन्यासों में शामिल किया गया। आपने समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में लिखना जारी रखा और 03 पुस्तकें प्रकाशित कीं जिनमें इन द वोम्ब ऑव सौदादे नामक लघु कहानियों का संग्रह, द ग्रेटर ट्रैजडी नामक नाटक और हार्टब्रेक पैसेज नामक उपन्यास शामिल है।

4. आपने अपने पूरे जीवन काल के दौरान युवा संगीत प्रतिभा को प्रोत्साहित किया है। आपने गोवा में मैंडो समारोह जैसे संगीत कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए हैं। वर्ष, 1996 में आपने कोंकणी तैत्र 'बॉक्सटेंच टेपॉट मरिनका' लिखा जिसका मंचन गोवा में कला अकादमी में किया गया।

5. गोवा सरकार द्वारा कई अवसरों पर स्वतंत्रता सेनानी के रूप में मान्यता स्वरूप आपको पुरस्कृत किया गया है। गोवा सरकार द्वारा आपको राज्य सांस्कृतिक पुरस्कार, वर्ष, 2004 में लक्ष्मीदास बोरकर राइटर्स पुरस्कार, कला अकादमी, गोवा द्वारा वर्ष, 2008 में साहित्य के क्षेत्र में आपके आजीवन योगदान के लिए गोमंत शारदा पुरस्कार, गोवा चैम्बर्स ऑव कामर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा वर्ष, 2013 में अपने मीडिया पुरस्कार समारोह में लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार और गोवा के स्वतंत्रता आंदोलन में आपके योगदान और पत्रकारिता तथा साहित्य में आपकी उपलब्धियों के लिए गोवा सरकार द्वारा वर्ष, 2014 में राज्य सरकार के सर्वोच्च सिविलियन पुरस्कार गोमंत विभूषण पुरस्कार से आपको सम्मानित किया गया।